

बौद्ध दर्शन में ज्ञान परंपरा

गरिमा राय

असिस्टेंट प्रोफेसर- शिक्षाशास्त्र, श्री दुर्गा जी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चण्डेश्वर, आजमगढ़

Email: garimarai1910@gmail.com



Received 05 May 2026

Accepted 15 May 2026

Published 20 May 2026

Corresponding Author:

गरिमा राय

Email: garimarai1910@gmail.com

Doi: <https://doi.org/10.64880/ijeagr.v1i2.10>

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sector.

Copyright: © 2026 The Author(s).



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

OPEN ACCESS

सार (Abstract)

बौद्ध दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा की एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली धारा है, जिसने मानव जीवन, ज्ञान, नैतिकता तथा मुक्ति के विषय में गहन चिंतन प्रस्तुत किया। प्रस्तुत शोधपत्र में बौद्ध दर्शन की ज्ञान परंपरा का विस्तृत अध्ययन किया गया है। इसमें बौद्ध दर्शन के मूल सिद्धांतों—चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पाद, अनात्मवाद तथा क्षणिकवाद—का विवेचन करते हुए ज्ञान की अवधारणा को स्पष्ट किया गया है। बौद्ध चिंतन में ज्ञान को “प्रज्ञा” के रूप में स्वीकार किया गया है, जो मनुष्य को अज्ञान और दुःख से मुक्त कर निर्वाण की ओर ले जाता है। इस शोधपत्र में बौद्ध ज्ञानमीमांसा के अंतर्गत प्रत्यक्ष और अनुमान जैसे प्रमाणों की चर्चा की गई है साथ ही बौद्ध शिक्षा परंपरा, नालंदा एवं विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों की भूमिका तथा महायान और हीनयान की ज्ञानधाराओं का भी विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बौद्ध दर्शन ने भारतीय ज्ञान परंपरा को तर्क, अनुभव, करुणा और नैतिकता का नया आयाम प्रदान किया। अंततः यह शोधपत्र इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि बौद्ध ज्ञान परंपरा केवल धार्मिक विचारधारा नहीं, बल्कि मानव कल्याण और वैश्विक शांति का एक सार्वभौमिक मार्ग है, जिसकी प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी बनी हुई है।

मुख्य शब्द (Keywords): बौद्ध दर्शन, ज्ञान परंपरा, प्रज्ञा, निर्वाण, ज्ञानमीमांसा, महायान, हीनयान, भारतीय दर्शन।

प्रस्तावना

भारतीय दर्शन की परम्परा विश्व की सबसे प्राचीन एवं समृद्ध बौद्धिक परम्पराओं में मानी जाती है। इस परम्परा में वेद, उपनिषद, जैन तथा बौद्ध दर्शन ने मानव जीवन, समाज और आध्यात्मिकता को नई दिशा प्रदान की। भारतीय चिंतन का मूल उद्देश्य केवल सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करना नहीं रहा, बल्कि जीवन के दुःखों, समस्याओं और उनके समाधान की खोज करना भी रहा है। इन्हीं दार्शनिक परम्पराओं में बौद्ध दर्शन का विशेष महत्व है, क्योंकि इसने मानव जीवन को व्यावहारिक दृष्टिकोण से समझने और उसे नैतिक तथा आध्यात्मिक आधार प्रदान करने का प्रयास किया।

“बौद्ध दर्शन में ज्ञान परम्परा” का विषय भारतीय ज्ञान-परम्परा के उस महत्वपूर्ण पक्ष को स्पष्ट करता है, जिसमें ज्ञान को केवल पुस्तकीय या सैद्धान्तिक विषय न मानकर जीवन के अनुभव, साधना और आचरण से जोड़कर देखा गया है। बौद्ध दर्शन में ज्ञान का अर्थ केवल सूचना या बौद्धिक क्षमता नहीं है, बल्कि “प्रज्ञा” अर्थात् सत्य का प्रत्यक्ष बोध है। भगवान बुद्ध ने ज्ञान को मानव मुक्ति का साधन माना। उनके अनुसार संसार में व्याप्त दुःख का मूल कारण अज्ञान है, और सम्यक ज्ञान के माध्यम से ही मनुष्य दुःखों से मुक्त होकर निर्वाण प्राप्त कर सकता है।

बौद्ध ज्ञान परम्परा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी गुरु-शिष्य परम्परा है। बुद्ध ने अपने उपदेशों को जनसाधारण की भाषा पालि में प्रस्तुत किया, जिससे सामान्य लोग भी उन्हें आसानी से समझ सकें। उनके उपदेशों को उनके शिष्यों ने स्मरण रखा और आगे आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाया। बाद में यही शिक्षाएँ त्रिपिटक के रूप में संकलित हुईं। इस प्रकार बौद्ध ज्ञान परम्परा मौखिक और लिखित दोनों माध्यमों से विकसित हुई। बौद्ध संघ, विहार तथा विश्वविद्यालय इस ज्ञान परम्परा के प्रमुख केंद्र बने। नालंदा, विक्रमशिला और तक्षशिला जैसे महान शिक्षा केंद्रों ने न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण एशिया में बौद्ध ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया। यहाँ दर्शन, तर्कशास्त्र, व्याकरण, चिकित्सा तथा ध्यान-साधना की शिक्षा दी जाती थी। इससे स्पष्ट होता है कि बौद्ध ज्ञान परम्परा केवल धार्मिक शिक्षा तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह बहुआयामी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से युक्त थी।

बौद्ध दर्शन में ज्ञान का संबंध नैतिकता और करुणा से भी जुड़ा हुआ है। बुद्ध ने मानव जीवन में अहिंसा, दया, मैत्री और करुणा को विशेष महत्व दिया। उनका मानना था कि ज्ञान तभी सार्थक है जब वह मानव कल्याण और समाज में शांति की स्थापना में सहायक बने। इसलिए बौद्ध ज्ञान परम्परा केवल आत्मकल्याण तक सीमित न होकर विश्व-कल्याण की भावना से प्रेरित है।

अतः “बौद्ध दर्शन में ज्ञान परम्परा” का अध्ययन न केवल भारतीय दर्शन को समझने के लिए आवश्यक है, बल्कि यह मानव जीवन के नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास के लिए भी अत्यंत उपयोगी है। यह परम्परा हमें सत्य, करुणा, विवेक और आत्मानुशासन का संदेश देती है, जो आज के युग में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना प्राचीन काल में था।

बौद्ध ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक विकास

6वीं शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध ज्ञान परंपरा का विकास भारतीय समाज में हो रहे सामाजिक और धार्मिक परिवर्तनों के बीच हुआ। उस समय समाज में वैदिक कर्मकांड, यज्ञ और जाति व्यवस्था का बहुत प्रभाव था। धार्मिक ज्ञान मुख्य रूप से ब्राह्मणों तक सीमित था और सामान्य लोगों के लिए धर्म को समझना कठिन हो गया था। इसी परिस्थिति में कई नए धार्मिक और दार्शनिक आंदोलन उभरे, जिन्हें श्रमण परंपरा कहा जाता है। गौतम बुद्ध ने इसी वातावरण में एक नई ज्ञान परंपरा की शुरुआत की, जो तर्क, अनुभव, नैतिकता और मानव कल्याण पर आधारित थी। उन्होंने धर्म को केवल कर्मकांडों तक सीमित न रखकर उसे मानव जीवन की समस्याओं से जोड़ा।

गौतम बुद्ध का प्रारंभिक नाम सिद्धार्थ था। उन्होंने जीवन में वृद्धावस्था, बीमारी, मृत्यु और संन्यासी को देखकर यह समझने का प्रयास किया कि मनुष्य दुःख क्यों भोगता है। सत्य की खोज के लिए उन्होंने गृह त्याग किया, जिसे महाभिनिष्क्रमण कहा जाता है। कई वर्षों तक तपस्या करने के बाद उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि अत्यधिक भोग और अत्यधिक तपस्या दोनों ही उचित नहीं हैं। इसलिए उन्होंने “मध्यम मार्ग” का सिद्धांत दिया, जो संतुलित जीवन पर आधारित था। बोधगया में ज्ञान प्राप्त करने के बाद वे “बुद्ध” कहलाए और उन्होंने सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया। इस उपदेश में उन्होंने चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग की शिक्षा दी। उनके अनुसार चार आर्य सत्य हैं- जीवन में दुःख है, दुःख का कारण तृष्णा है, दुःख का निरोध संभव है, अष्टांगिक मार्ग का पालन करके दुःख से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। बुद्ध द्वारा बताए गए अष्टांगिक मार्ग में सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाणी, सम्यक कर्म, सम्यक आजीविका, सम्यक प्रयास, सम्यक स्मृति तथा सम्यक समाधि सम्मिलित हैं।

बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद उनके उपदेशों को सुरक्षित रखने और व्यवस्थित करने के लिए बौद्ध संघ की स्थापना की गई। समय-समय पर बौद्ध संगीति आयोजित हुई, जिनमें बुद्ध के उपदेशों का संकलन किया गया। इन उपदेशों को त्रिपिटक के रूप में व्यवस्थित किया गया, जिसमें विनय पिटक, सुत्त पिटक

और अभिधम्म पिटक शामिल हैं। विनय पिटक में संघ के नियमों का वर्णन है, सुत्त पिटक में बुद्ध के उपदेश संग्रहीत हैं तथा अभिधम्म पिटक में बौद्ध दर्शन और मनोविज्ञान का विश्लेषण मिलता है। त्रिपिटक बौद्ध ज्ञान परम्परा का प्रमुख साहित्यिक आधार बना और इससे शिक्षा, दर्शन तथा नैतिक चिंतन का विकास हुआ।

मौर्य सम्राट अशोक के शासनकाल में बौद्ध धर्म और बौद्ध ज्ञान परम्परा को विशेष संरक्षण प्राप्त हुआ। कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाया और उसके प्रचार-प्रसार के लिए अनेक कार्य किए। उन्होंने स्तूपों, विहारों और शिक्षा केन्द्रों का निर्माण करवाया तथा धर्म प्रचारकों को विदेशों में भेजा। अशोक के प्रयासों से बौद्ध धर्म भारत से बाहर श्रीलंका, चीन और मध्य एशिया तक फैल गया। इस प्रकार बौद्ध ज्ञान परम्परा अंतरराष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण करने लगी।

बौद्ध काल में शिक्षा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई। नालंदा विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय और तक्षशिला जैसे महान शिक्षा केन्द्र ज्ञान-विज्ञान के प्रमुख केन्द्र बने। इन विश्वविद्यालयों में दर्शन, तर्कशास्त्र, चिकित्सा, व्याकरण, ज्योतिष तथा अन्य विषयों की शिक्षा दी जाती थी। भारत के अतिरिक्त चीन, तिब्बत और अन्य देशों से भी विद्यार्थी यहाँ अध्ययन करने आते थे। इससे स्पष्ट होता है कि बौद्ध ज्ञान परम्परा ने शिक्षा और बौद्धिक विकास को व्यापक रूप से प्रभावित किया।

हीनयान और महायान परंपरा-

बौद्ध दर्शन में हीनयान और महायान दो महत्वपूर्ण परम्पराएँ हैं, जिनका विकास गौतम बुद्ध के निर्वाण के बाद हुआ। समय के साथ बुद्ध के उपदेशों की व्याख्या, साधना-पद्धति तथा मोक्ष के स्वरूप को लेकर बौद्ध संघ में मतभेद उत्पन्न हुए, जिनसे इन दो धाराओं का विकास हुआ। हीनयान को प्राचीन बौद्ध परम्परा माना जाता है, जबकि महायान बाद में विकसित होकर अधिक व्यापक और उदार दृष्टिकोण के रूप में सामने आया। “हीनयान” शब्द का अर्थ “छोटा वाहन” होता है, परंतु यह नाम महायान परम्परा द्वारा दिया गया था और आज कई विद्वान इसे अनुपयुक्त मानते हैं। वर्तमान समय में इसका प्रमुख रूप थेरवाद के नाम से जाना जाता है। दूसरी ओर “महायान” का अर्थ “बड़ा वाहन” है, जो अधिक लोगों के कल्याण और मोक्ष का मार्ग प्रस्तुत करता है।

हीनयान परम्परा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की व्यक्तिगत मुक्ति या निर्वाण प्राप्त करना है। इस परम्परा में “अर्हत” को आदर्श माना गया है। अर्हत वह व्यक्ति होता है जो कठोर साधना, ध्यान और नैतिक अनुशासन के माध्यम से अपने सभी दुखों और वासनाओं का अंत करके निर्वाण प्राप्त कर लेता है। हीनयान में बुद्ध को एक महान मानव, शिक्षक और मार्गदर्शक माना गया है, न कि ईश्वर या दिव्य शक्ति के रूप में। इस परम्परा में आत्मसंयम, तप, ध्यान और विनय के नियमों का विशेष महत्व है। इसके अनुयायी मूल बौद्ध ग्रंथों, विशेषकर पालि भाषा में रचित त्रिपिटक, को अत्यधिक प्रामाणिक मानते हैं। हीनयान परम्परा का प्रसार मुख्यतः श्रीलंका, थाईलैंड, म्यांमार तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के अन्य देशों में हुआ।

इसके विपरीत महायान परम्परा अधिक उदार, व्यापक और लोकहितकारी विचारधारा के रूप में विकसित हुई। महायान का मुख्य उद्देश्य केवल स्वयं का निर्वाण प्राप्त करना नहीं, बल्कि समस्त प्राणियों के कल्याण और मुक्ति के लिए कार्य करना है। इस परम्परा में “बोधिसत्त्व” को सर्वोच्च आदर्श माना गया है। बोधिसत्त्व वह साधक होता है जो स्वयं निर्वाण प्राप्त करने की क्षमता रखते हुए भी अन्य जीवों के उद्धार के लिए संसार में बना रहता है। महायान में बुद्ध को दिव्य स्वरूप और अलौकिक शक्ति से युक्त माना गया। यहाँ अनेक बुद्धों और बोधिसत्त्वों की पूजा का विकास हुआ। करुणा, दया और प्रज्ञा को महायान का मुख्य आधार माना गया है। इस परम्परा में संस्कृत भाषा में अनेक नए सूत्र और ग्रंथ रचे गए, जैसे लोटस सूत्र और प्रज्ञापारमिता साहित्य। महायान का प्रसार चीन, जापान, तिब्बत आदि क्षेत्रों में हुआ।

इन दोनों परम्पराओं में अनेक अंतर दिखाई देते हैं। हीनयान व्यक्तिगत मोक्ष और कठोर साधना पर बल देता है, जबकि महायान सार्वभौमिक कल्याण और करुणा को अधिक महत्व देता है। हीनयान में बुद्ध को मानव गुरु माना जाता है, जबकि महायान में उन्हें दिव्य रूप में स्वीकार किया गया। हीनयान का आदर्श अर्हत है, जबकि महायान का आदर्श बोधिसत्त्व है। भाषा की दृष्टि से हीनयान पालि पर आधारित है, जबकि महायान में संस्कृत का अधिक प्रयोग

हुआ। इन भिन्नताओं के बावजूद दोनों परम्पराओं का मूल आधार बुद्ध के चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग और अहिंसा, करुणा तथा नैतिक जीवन की शिक्षाएँ ही हैं। इस प्रकार हीनयान और महायान दोनों ने बौद्ध धर्म के विकास, विस्तार और विश्वव्यापी प्रभाव में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

बौद्ध दर्शन में ज्ञान का प्रमाण-

बौद्ध दर्शन में “प्रमाण” का अर्थ उस साधन से है जिसके द्वारा मनुष्य को किसी वस्तु का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है। बौद्ध दार्शनिकों के अनुसार वही ज्ञान प्रमाणिक है जो भ्रम, संदेह और कल्पना से रहित हो। बौद्ध दर्शन मुख्य रूप से दो प्रमाणों को स्वीकार करता है—प्रत्यक्ष और अनुमान।

प्रत्यक्ष प्रमाण- प्रत्यक्ष प्रमाण वह ज्ञान है जो सीधे इन्द्रियों अथवा अनुभव से प्राप्त होता है। जब कोई वस्तु हमारी आँखों, कानों, नाक, जीभ या त्वचा के संपर्क में आती है और हम उसका सीधा अनुभव करते हैं, तब उसे प्रत्यक्ष ज्ञान कहा जाता है। उदाहरण के लिए, आँखों से कमल का फूल देखना, कानों से संगीत सुनना या नाक से सुगंध का अनुभव करना प्रत्यक्ष ज्ञान के उदाहरण हैं। बौद्ध दर्शन में प्रत्यक्ष को सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण माना गया है, क्योंकि यह तत्काल और वास्तविक अनुभव पर आधारित होता है। बौद्ध आचार्यों ने प्रत्यक्ष को निर्विकल्प ज्ञान कहा है, अर्थात् ऐसा ज्ञान जिसमें कल्पना या अनुमान का मिश्रण न हो।

बौद्ध दर्शन में प्रत्यक्ष के तीन मुख्य प्रकार बताए गए हैं—इन्द्रिय प्रत्यक्ष, मानसिक प्रत्यक्ष और योगिक प्रत्यक्ष। इन्द्रिय प्रत्यक्ष वह है जो पाँच इन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त होता है। मानसिक प्रत्यक्ष मन द्वारा अनुभव किए गए सुख, दुःख, स्मृति या विचार का ज्ञान है। उदाहरण के लिए, मन में प्रसन्नता या पीड़ा का अनुभव मानसिक प्रत्यक्ष कहलाता है। योगिक प्रत्यक्ष वह विशेष ज्ञान है जो ध्यान और साधना के माध्यम से प्राप्त होता है। बौद्ध साधक ध्यान के द्वारा अनित्यता, दुःख और निर्वाण जैसे सत्य का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं।

अनुमान प्रमाण- अनुमान प्रमाण वह ज्ञान है जो किसी ज्ञात तथ्य के आधार पर अज्ञात तथ्य का बोध कराता है। जब मनुष्य किसी चिन्ह या कारण को देखकर किसी निष्कर्ष तक पहुँचता है, तब वह अनुमान कहलाता है। उदाहरण के लिए, यदि पर्वत पर धुआँ दिखाई देता है, तो मनुष्य यह निष्कर्ष निकालता है कि वहाँ आग अवश्य होगी। इसी प्रकार काले बादलों को देखकर वर्षा होने का अनुमान लगाया जाता है। बौद्ध तर्कशास्त्र में अनुमान का विशेष महत्व है, क्योंकि यह तर्क, कारण और व्याप्ति पर आधारित होता है।

बौद्ध ज्ञान मीमांसा के प्रमुख सिद्धांत-

प्रत्यक्ष का सिद्धांत- बौद्ध दर्शन में प्रत्यक्ष को सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण माना गया है। प्रत्यक्ष का अर्थ है—ऐसा ज्ञान जो बिना किसी भाषा, कल्पना या मानसिक व्याख्या के सीधे अनुभव से प्राप्त हो। जब आँख किसी वस्तु को देखती है, कान ध्वनि सुनते हैं या त्वचा स्पर्श का अनुभव करती है, तब जो तत्काल ज्ञान उत्पन्न होता है वही प्रत्यक्ष है।

अनुमान का सिद्धांत- प्रत्यक्ष के बाद अनुमान को दूसरा प्रमाण माना गया है। अनुमान वह ज्ञान है जो किसी संकेत या कारण के आधार पर प्राप्त होता है। जब हम किसी वस्तु को प्रत्यक्ष नहीं देखते, तब तर्क और पूर्व अनुभव के आधार पर निष्कर्ष निकालते हैं।

प्रतीत्यसमुत्पाद- प्रतीत्यसमुत्पाद बौद्ध दर्शन का केंद्रीय सिद्धांत है, जिसे गौतम बुद्ध ने जीवन, दुःख और संसार की वास्तविकता को समझाने के लिए प्रतिपादित किया। “प्रतीत्यसमुत्पाद” का शाब्दिक अर्थ है—“परस्पर निर्भरता से उत्पत्ति”। इसका आशय यह है कि संसार में कोई भी वस्तु, घटना या अवस्था स्वतंत्र रूप से उत्पन्न नहीं होती, बल्कि अनेक कारणों और परिस्थितियों पर निर्भर होकर अस्तित्व में आती है। बुद्ध ने कहा—“जब यह होता है तब वह होता है; जब यह नहीं होता तब वह भी नहीं होता।” अर्थात् प्रत्येक वस्तु कारण-कार्य संबंध से जुड़ी हुई है। उदाहरण के लिए, बीज से वृक्ष उत्पन्न होता है, लेकिन केवल बीज पर्याप्त नहीं होता; मिट्टी, जल, वायु, प्रकाश और समय भी आवश्यक होते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि संसार की हर वस्तु परस्पर निर्भर है।

यह सिद्धांत विशेष रूप से दुःख की उत्पत्ति को समझाने के लिए महत्वपूर्ण है। बौद्ध दर्शन के अनुसार दुःख बिना कारण के उत्पन्न नहीं होता। उसके पीछे कारणों की एक श्रृंखला कार्य करती है, जिसे “द्वादश निदान” कहा जाता है। इस श्रृंखला का प्रारंभ अविद्या (अज्ञान) से होता है। अज्ञान से संस्कार उत्पन्न

होते हैं, संस्कार से विज्ञान, विज्ञान से नाम-रूप, और इसी प्रकार क्रमशः तृष्णा, उपादान, भव, जाति और अंत में जरा-मरण तथा दुःख उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में बँधा रहता है। बुद्ध का मत था कि यदि इस श्रृंखला के मूल कारण अर्थात् अविद्या को समाप्त कर दिया जाए, तो आगे की पूरी प्रक्रिया समाप्त हो जाएगी और दुःख का अंत संभव होगा। यही निर्वाण की अवस्था है।

क्षणिकवाद- क्षणिकवाद बौद्ध दर्शन का अत्यंत प्रसिद्ध सिद्धांत है। इसके अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु हर क्षण बदलती रहती है। कोई भी वस्तु स्थायी नहीं है। जो हमें स्थिर दिखाई देता है, वह वास्तव में लगातार परिवर्तनशील है। बौद्धों का तर्क है कि यदि कोई वस्तु स्थायी हो, तो उसमें परिवर्तन संभव नहीं होगा। लेकिन संसार में हर वस्तु उत्पन्न होती है, कुछ समय रहती है और फिर नष्ट हो जाती है। उदाहरण के लिए, नदी हमें एक ही दिखाई देती है, लेकिन उसका जल हर क्षण बदलता रहता है। उसी प्रकार मन और चेतना भी निरंतर बदलती रहती है।

अनात्मवाद- बौद्ध दर्शन आत्मा के स्थायी अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता। उसके अनुसार मनुष्य पाँच स्कन्धों—रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान—का समूह मात्र है। इन स्कन्धों के अतिरिक्त कोई स्थायी “आत्मा” नहीं है। हम सामान्यतः यह मानते हैं कि “मैं” एक स्थायी सत्ता हूँ, लेकिन बौद्ध दर्शन के अनुसार यह केवल मानसिक भ्रम है। शरीर बदलता है, विचार बदलते हैं, भावनाएँ बदलती हैं और स्मृतियाँ भी बदलती रहती हैं। इसलिए स्थायी आत्मा की कल्पना तर्कसंगत नहीं है।

आधुनिक संदर्भ में बौद्ध ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता-

गौतम बुद्ध की बौद्ध ज्ञान परंपरा आधुनिक युग में अत्यंत प्रासंगिक मानी जाती है। आज का समाज तनाव, हिंसा, असमानता और पर्यावरण संकट जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। बौद्ध धर्म का मध्यम मार्ग, अहिंसा और करुणा का सिद्धांत मानव को शांति और संतुलित जीवन की प्रेरणा देता है। ध्यान और माइंडफुलनेस जैसी बौद्ध पद्धतियाँ मानसिक तनाव को कम करने में सहायक हैं, इसलिए इन्हें विश्वभर में अपनाया जा रहा है।

बौद्ध विचारधारा तर्क, अनुभव और समानता पर आधारित है। यह जाति-भेद, ऊँच-नीच और अंधविश्वास का विरोध करती है, जिससे सामाजिक समरसता और लोकतांत्रिक मूल्यों को बल मिलता है। इसके साथ ही, प्रकृति के प्रति सम्मान और सीमित उपभोग की शिक्षा आज के पर्यावरणीय संकट के समाधान में भी उपयोगी सिद्ध होती है। इस प्रकार बौद्ध ज्ञान परंपरा आधुनिक समाज को नैतिक, सामाजिक और मानसिक दिशा प्रदान करती है।

निष्कर्ष

बौद्ध दर्शन में ज्ञान परम्परा भारतीय दार्शनिक चिंतन की एक महत्वपूर्ण एवं समृद्ध धारा है, जिसने मानव जीवन को सत्य, करुणा, नैतिकता और विवेक का मार्ग प्रदान किया। भगवान गौतम बुद्ध ने ज्ञान को केवल सैद्धान्तिक विषय न मानकर जीवन की समस्याओं के समाधान का साधन माना। उनके अनुसार अज्ञान ही दुःख का मूल कारण है और सम्यक ज्ञान द्वारा ही मनुष्य निर्वाण अथवा दुःखों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बौद्ध ज्ञान परम्परा अनुभव, तर्क और साधना पर आधारित है। बुद्ध ने अंधविश्वास, कर्मकाण्ड तथा रूढ़ियों का विरोध करते हुए स्वतंत्र चिंतन और आत्मानुभूति को महत्व दिया। यही कारण है कि बौद्ध दर्शन को व्यावहारिक, वैज्ञानिक और मानवतावादी दर्शन माना जाता है। बौद्ध परम्परा में ज्ञान का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि व्यक्ति के नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान से भी जुड़ा हुआ है। त्रिपिटक, बौद्ध संघ, विहार तथा नालंदा और विक्रमशिला जैसे शिक्षा केंद्रों ने इस ज्ञान परम्परा के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन संस्थानों ने भारत ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण एशिया में बौद्ध विचारधारा का प्रचार-प्रसार किया। इससे यह सिद्ध होता है कि बौद्ध ज्ञान परम्परा सार्वभौमिक एवं लोककल्याणकारी रही है।

वर्तमान समय में भी बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता बनी हुई है। आज जब विश्व हिंसा, तनाव, असहिष्णुता और मानसिक अशांति जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है, तब बुद्ध के सिद्धांत—जैसे अहिंसा, करुणा, मध्यम मार्ग और ध्यान—मानव समाज को शांति एवं संतुलन का मार्ग प्रदान करते हैं। आधुनिक शिक्षा और मनोविज्ञान में भी बौद्ध चिंतन के अनेक तत्वों को स्वीकार किया जा रहा है। अतः यह कहा जा सकता है कि बौद्ध दर्शन की ज्ञान परम्परा केवल प्राचीन भारतीय संस्कृति की धरोहर नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रेरणा का स्रोत है। यह परम्परा हमें विवेकपूर्ण जीवन, नैतिक आचरण तथा आत्मिक

शांति का संदेश देती है। इसलिए वर्तमान युग में बौद्ध ज्ञान परम्परा का अध्ययन और उसके मूल सिद्धांतों का अनुसरण मानव समाज के लिए अत्यंत उपयोगी एवं आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आचार्य, ब. (2011). *बौद्ध दर्शन मीमांसा*. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
2. उपाध्याय, ब. (2012). *बौद्ध दर्शन की रूपरेखा*. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
3. देव, न. (2008). *बौद्ध दर्शन*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. पांडेय, स. (2001). *भारतीय दर्शन की कहानी*. वाराणसी: मोतीलाल बनारसीदास।
5. मिश्र, उ. (2010). *भारतीय दर्शन*. प्रयागराज: हिंदी ग्रंथ अकादमी।
6. महाजन, ब. डी. (2015). *बौद्ध शिक्षा और दर्शन*. नई दिल्ली: ए. पी. एच. पब्लिशिंग।
7. राधाकृष्णन, स. (2010). *भारतीय दर्शन (भाग 1)*. नई दिल्ली: राजपाल एंड संस।
8. राहुल सांकृत्यायन. (2005). *बौद्ध धर्म और दर्शन*. इलाहाबाद: किताब महल।
9. शर्मा, च. (2014). *भारतीय दर्शन की आलोचनात्मक विवेचना*. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
10. त्रिपाठी, र. (2013). *बौद्ध ज्ञानमीमांसा*. वाराणसी: संस्कृत पुस्तक भंडार।
11. नागार्जुन. (2009). *माध्यमिक कारिका*. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
12. अश्वघोष. (2007). *बुद्धचरित*. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
13. धर्मकीर्ति. (2011). *न्यायबिंदु*. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.